नेहरू बाल पुस्तकालय

होली की गुझिया

शोभा अग्रवाल

चित्र
अतुल वर्धन

nbt.india
एकः सूते सकलम्
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

9 से 11 वर्ष के बच्चों के लिए

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की स्थापना पुस्तकों के प्रोन्नयन और पठन अभिरुचि के विकास के उद्देश्य से सन् 1957 में भारत सरकार (उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय) द्वारा की गई थी। न्यास द्वारा हिंदी, अँग्रेजी सहित 30 से अधिक भाषाओं व बोलियों में पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। बच्चों की पुस्तकों का प्रकाशन सदैव से संस्था की प्राथमिकता रहा है।

ISBN 978-81-237-7650-7

पहला संस्करण : 2015
दूसरी आवृत्ति : 2019 *(शक 1940)*

Holi ki Gujhiya *(Hindi Original)*
₹ 35.00
निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित
www.nbtindia.gov.in

पात्र-परिचय

बच्चे

विनीता	—	आठ वर्षीया लड़की
नीरज	—	विनीता का छह वर्षीय भाई
		(विनीता और नीरज के पड़ोसी दोस्त)
सौरभ	—	लगभग दस वर्षीय थोड़ा मोटा लड़का
विवेक	—	लगभग छह वर्षीय लड़का

स्त्री

माँ	—	विनीता की माँ
दादी	—	विनीता की दादी

पुरुष

पापा	—	विनीता के पिता जी
बाबा	—	विनीता के बाबा
रमेश चाचा	—	विनीता के पड़ोसी

(परदा खुलता है)

पहला दृश्य

(सवेरे का समय है। मंच पर धीमी रोशनी है। माँ और दादी दोनों पाटे पर बैठी हैं। दो-तीन परात व दो-तीन थालियाँ व गैस रखी हैं। चकला-बेलन रखा है। गैस पर कढ़ाई चढ़ी है। माँ और दादी गुझिया बना रही हैं।)

(नेपथ्य से कोयल की कूक सुनाई देती है। नीरज और विनीता का प्रवेश। दोनों सोकर उठे हैं, उनके बाल उलझे हुए हैं।)

माँ — उठ गए बच्चो!

विनीता — हाँ माँ! हमलोग मंजन और कुल्ला भी कर आए।

दादी — विनीता..., नीरज! जाओ, नहा-धोकर आओ!

नीरज — दादी! पहले गुझिया खा लें, तब नहा लेंगे।

माँ — अभी गुझिया नहीं मिलेगी। शाम को होलिका देवी की पूजा होने के बाद ही गुझिया मिलेगी।

नीरज — अगर हमलोग दो-चार गुझिया खा भी लेंगे तो होलिका देवी को क्या कमी पड़ जाएगी!
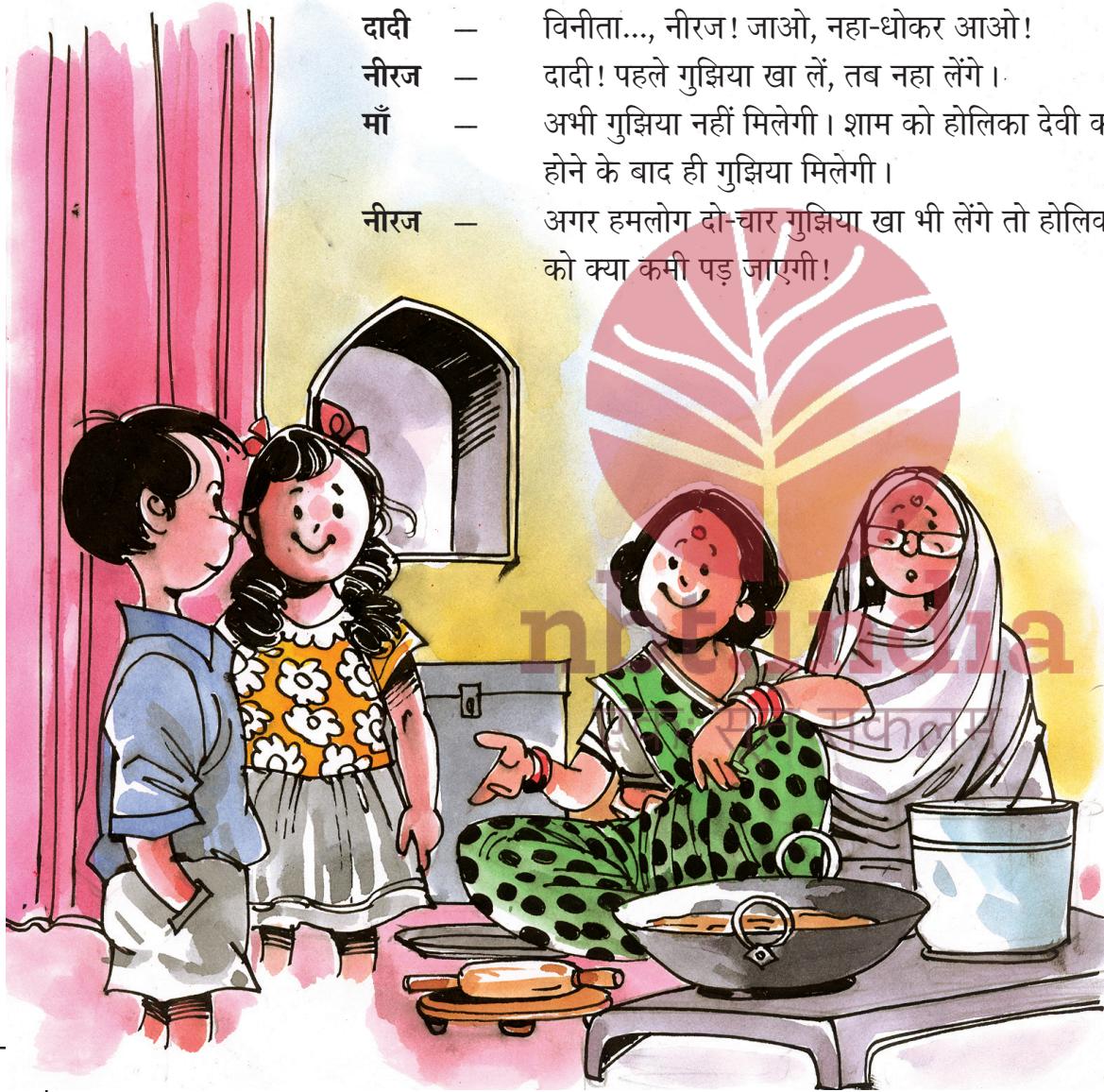
माँ — जाओ, बहस मत करो। नहाओ, तब नाश्ता मिलेगा।

विनीता — (धीरे से) चलो नीरज, चलकर नहा लेते हैं। तब तो गुझिया मिल ही जाएगी।

नीरज — हाँ, चलो दीदी।

(दोनों बच्चे चले जाते हैं।)

दादी — बहू! तू बच्चों के लिए नाश्ता बना दे।

माँ — ठीक है माँ जी! (माँ पराँठे बनाते हुए) आपको दूध दे दूँ या चाय बना दूँ?

दादी — दूध दे दो।

(माँ दादी को दूध देती हैं।)

(दोनों बच्चों का प्रवेश। दोनों नहाकर, बाल काढ़कर दूसरे कपड़े पहनकर आए हैं।)

माँ — आओ बच्चो! आज तो बहुत जल्दी नहा आए, नाश्ता कर लो।

(दोनों बच्चे पास में बिछी चटाई पर बैठ जाते हैं।)

(माँ दोनों को दो गिलास में दूध और एक प्लेट में पराँठे देती हैं।)

दोनों — (एक साथ मुँह बनाते हुए) माँ, यह क्या दे रही हो! गुझिया दो न।

माँ — जब एक बार कह दिया कि गुझिया शाम को पूजा के बाद मिलेगी, तब क्यों दिमाग चाट रहे हो!

नीरज — (शरारत से) हम दिमाग कैसे चाट सकते हैं? हम आपसे इतनी दूर बैठे हैं। हमारी जबान भी तो इतनी लंबी नहीं है कि आप तक पहुँच सके।

(सब लोग हँस पड़े।)

माँ — (कान खींचते हुए) बदमाश कहीं का! चलो, चुपचाप खाओ।

(बच्चे खाने लगते हैं।)

दूसरा दृश्य

(मंच पर टाँड़ बनी है। नीचे गद्दा बिछा है। नीरज और विनीता धीरे-धीरे बात कर रहे हैं।)

विनीता — (टाँड़ की ओर इशारा करके धीरे से) देखो! वहाँ पर गुझिया रखी हैं। अब ये कैसे खाई जाएँ ये सोचना है।

नीरज — सोचना क्या है दीदी! मैं तुम्हारे कंधे पर चढ़कर उतार लूँगा।

विनीता — अरे बुद्धू! मेरे कंधे पर चढ़कर भी तुम टाँड़ तक नहीं पहुँच सकते, क्योंकि टाँड़ तो बहुत ऊँची है।

नीरज — (माथे पर हाथ रखकर सोचते हुए) हैं, तब क्या करें?

विनीता — एक आइडिया है। पड़ोस से सौरभ और विवेक को बुला लाते हैं। उन्हें भी तो अभी गुझिया खाने को नहीं मिली होगी।

नीरज — जब हमें गुझिया नहीं मिली है तब उन्हें बुलाने से क्या फायदा?

विनीता — दिमाग का इस्तेमाल करो। जब चार बच्चे होंगे तब एक के कंधे पर दूसरा, उसके ऊपर तीसरा, इस प्रकार गुझिया तक पहुँच जाएँगे।

नीरज — अरे वाह! क्या धाँसू आइडिया है!

विनीता — धीरे बोलो।

(नीरज और विनीता बाहर जाते हैं। थोड़ी देर बाद सौरभ और विवेक के साथ प्रवेश)

सौरभ — मैं मोटा हूँ। मेरे कंधे पर तुमलोग चढ़ जाना। इस प्रकार टाँड़ तक पहुँच जाओगे।

विवेक — हाँ, ठीक है। मैं सबके ऊपर चढ़ते हुए टाँड़ तक पहुँच जाऊँगा।

नीरज — श...श...श...धीरे बोलो, वरना माँ और दादी जाग गईं तो सब कबाड़ा हो जाएगा।

(आपस में सब फुसफुसाकर बात करते हैं। नीरज अंदर जाता है और अखबार लाकर गद्दे पर बिछा देता है। सौरभ सबसे नीचे खड़ा हो गया। वह मोटा व तगड़ा है। उसके ऊपर नीरज चढ़ा, उसके ऊपर विवेक चढ़कर टाँड़ पर पहुँच गया। अब विनीता सौरभ के ऊपर चढ़कर, फिर नीरज के कंधे पर चढ़कर बैठ गई।)

विवेक — (टाँड़ पर चढ़े हुए दोनों हाथों से गुझिया निकाल ली। एक हाथ से गुझिया खाने लगा। दूसरे हाथ की गुझिया विनीता को देते हुए) इसे नीचे पहुँचाओ।

विनीता — विवेक! अभी गुझिया मत खाओ। नीचे उतरकर खाना।

(विनीता ने गुझिया नीरज को पकड़ाई, नीरज ने सौरभ को। सौरभ खाने लगा।)

नीरज — (चिल्लाते हुए) अभी गुझिया मत खाओ! नीचे रखे अखबार पर गुझिया इकट्ठा कर लो, बाद में खाएँगे।

सौरभ — (चिल्लाते हुए) अब तो गुझिया मेरे पेट में जा चुकी है।

(अंदर से माँ की आवाज आती है—क्यों शोर मचा रहे हो?)

विनीता — शोर मत करो। देखो, माँ जग गईं।
(सब चुप हो जाते हैं।)

विवेक — (टाँड़ पर चढ़े हुए दोनों हाथों से फिर गुझिया निकालता है। एक खुद खाने लगता है, दूसरी विनीता को पकड़ाता है।) बस, अब नहीं खाऊँगा।
(विनीता ने गुझिया नीरज को पकड़ाई। नीरज ने सौरभ को। सौरभ फिर गुझिया जल्दी-जल्दी भरने लगा। सौरभ को खाँसी आ गई। सब भड़भड़ाकर गिरते हैं।)

नीरज — अरे! विनीता का सिर फट गया।
(सिर पर हाथ लगाता है। सौरभ अपनी कमीज उतारकर देता है। नीरज विनीता के सिर पर कमीज लगाता है। टाँड़ पर बैठा हुआ विवेक विनीता को देखकर रोने लगता है।)
(अंदर से माँ की आवाज—अरे, ये बच्चे चीख क्यों रहे हैं?)
(माँ और दादी का दौड़ते हुए प्रवेश)

माँ — (विनीता को देखते हुए) अरे, विनीता का सिर फट गया! मैं मरहम-पट्टी... (दौड़कर अंदर जाती हैं। दादी विनीता के पास उसका सिर पकड़कर बैठ जाती है।)

दादी — सौरभ! जाकर बगल वाले रमेश चाचा को बुला ला। वह इस समय घर पर होंगे।

(सौरभ दौड़ता हुआ जाता है। फर्स्ट एड बॉक्स लिये हुए माँ का प्रवेश)

दादी — बहू, तू विनीता के मरहम-पट्‌टी कर दे जिससे खून रुक जाए।

(माँ विनीता को फर्स्ट एड देती हैं।)

(सौरभ व रमेश चाचा का दौड़ते हुए प्रवेश)

रमेश चाचा — क्या हुआ? विनीता को चोट कैसे लग गई?

विवेक — (टाँड़ से) रमेश चाचा! मुझे उतारिए, कबसे टँगा हूँ।

रमेश चाचा — (दोनों हाथ ऊपर करके विवेक को उतारते हैं।) आओ विवेक! तुम टाँड़ पर क्या कर रहे थे?

(विवेक भी नीचे उतरकर विनीता को देखने लगता है।)

दादी — रमेश! तू बहू के साथ विनीता को अस्पताल ले जा। बाद में देखेंगे कि यह टाँड़ पर क्या कर रहा था।

रमेश चाचा	–	अच्छा माँ जी! चलिए भाभी, चलो, विनीता बेटी। (रमेश चाचा, माँ व विनीता का प्रस्थान)
दादी	–	(डाँटते हुए) तुमलोगों ने क्या किया था? विवेक टाँड़ पर कैसे पहुँचा? विनीता को चोट कैसे लगी?
नीरज	–	(डरते हुए) हमलोग गुझिया खाना चाहते थे। इसलिए सौरभ और विवेक को बुला लाए। एक-दूसरे पर चढ़कर टाँड़ तक पहुँचे।
दादी	–	(नीरज के कान खींचते हुए) और इसी चक्कर में गिर गए। देखा, विनीता का सिर फट गया...कुछ अनहोनी हो जाती तो सारा होली का त्योहार बरबाद हो जाता। (ऊपर हाथ जोड़कर) हे विधाता! तेरी बड़ी कृपा है कि विनीता को अधिक चोट नहीं लगी।
सौरभ	–	(डरते हुए) दादी! हमलोग जाएँ।
दादी	–	हाँ जाओ! शाम को आना गुझिया खाने। (सौरभ और विवेक का प्रस्थान)
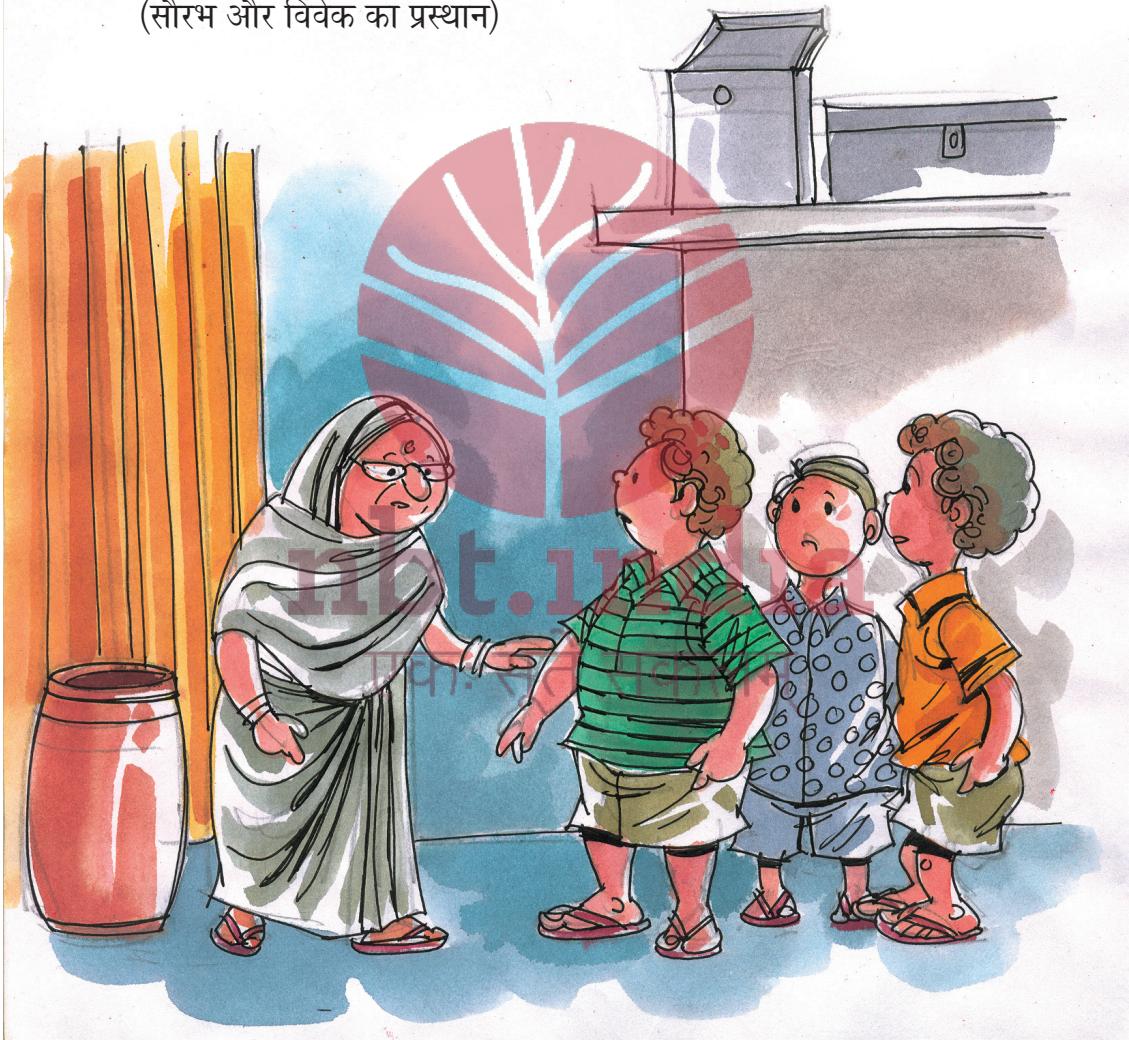
तीसरा दृश्य

(कुछ कुरसियाँ पड़ी हैं। पापा, बाबा, दादी व माँ बैठे हैं। विनीता खटिया पर लेटी सो रही है। उसके सिर पर पट्टी बँधी है।)

पापा — अगर बच्चों को पहले ही गुझिया दे दी जाती तो यह सब क्यों होता?

माँ — होलिका पर चढ़ाने के बाद ही गुझिया खाई जाती है।

पापा — यह भी कोई बात है कि होलिका में चढ़ने के बाद ही कोई गुझिया खा सकता है। वैसे भी होलिका में जलकर तो गुझिया नष्ट हो ही जाएगी। इससे भला तो किसी गरीब को ही खिला दो!

दादी — (पापा को डाँटते हुए) विष्णु! नास्तिकता की बातें मत करो।

बाबा — (हँसते हुए) अरे विष्णु की माँ! नास्तिकता कहाँ? तुम ही तो कहती हो कि बच्चे भगवान के रूप होते हैं। तब इन्हें खाने से पहले क्यों रोका?

दादी — (भन्नाते हुए) बच्चों ने गलती की, उन्हें तो कहोगे नहीं, उलटे मेरे ऊपर ही दोषारोपण कर रहे हो!

विनीता — (जग जाती है) दादी! पूजा हो गई क्या? गुझिया दोगी।
(सब हँसने लगते हैं।)

माँ — (हँसते हुए) सिर फटने के बाद भी इसे गुझिया की ही पड़ी है।

बाबा — (उठते हुए) इसका भोलापन देखकर अब मुझसे नहीं रहा जा रहा है। होलिका की पूजा जब होगी तब होगी। मैं अभी आया... (बाबा का अंदर की ओर प्रस्थान)

दादी — अरे, वहाँ भीतर कहाँ चले...सुनो तो सही...

(तभी बाबा का एक बड़ा डिब्बा लिये हुए प्रवेश)

बाबा — (विनीता को गुझिया देते हुए) लो बेटा! गुझिया खाओ।

विनीता — (उठकर बैठते हुए गुझिया लेती है व खाती है।) बाबा! गुझिया खाकर तो मेरा सारा दर्द ठीक हो गया। माँ और दादी गुझिया कमाल की बनाती हैं।

(सब हँसते हैं। नीरज अंदर से आता है।)

बाबा — (नीरज को गुझिया देते हैं) लो बेटा! तुम भी खाओ।

नीरज — (गुझिया लेते हुए) सौरभ और विवेक को भी बुला लाऊँ?

बाबा — हाँ! बुला लाओ।

(नीरज गुझिया खाता हुआ दौड़ता हुआ बाहर जाता है।)

दादी — (बाबा से) विष्णु के बाबूजी! तुम ठीक कहते हो। बाल भगवान की सच्ची मूर्तियाँ तो यही हैं। जब बच्चे खुश रहेंगे तो भगवान भी खुश रहेंगे।
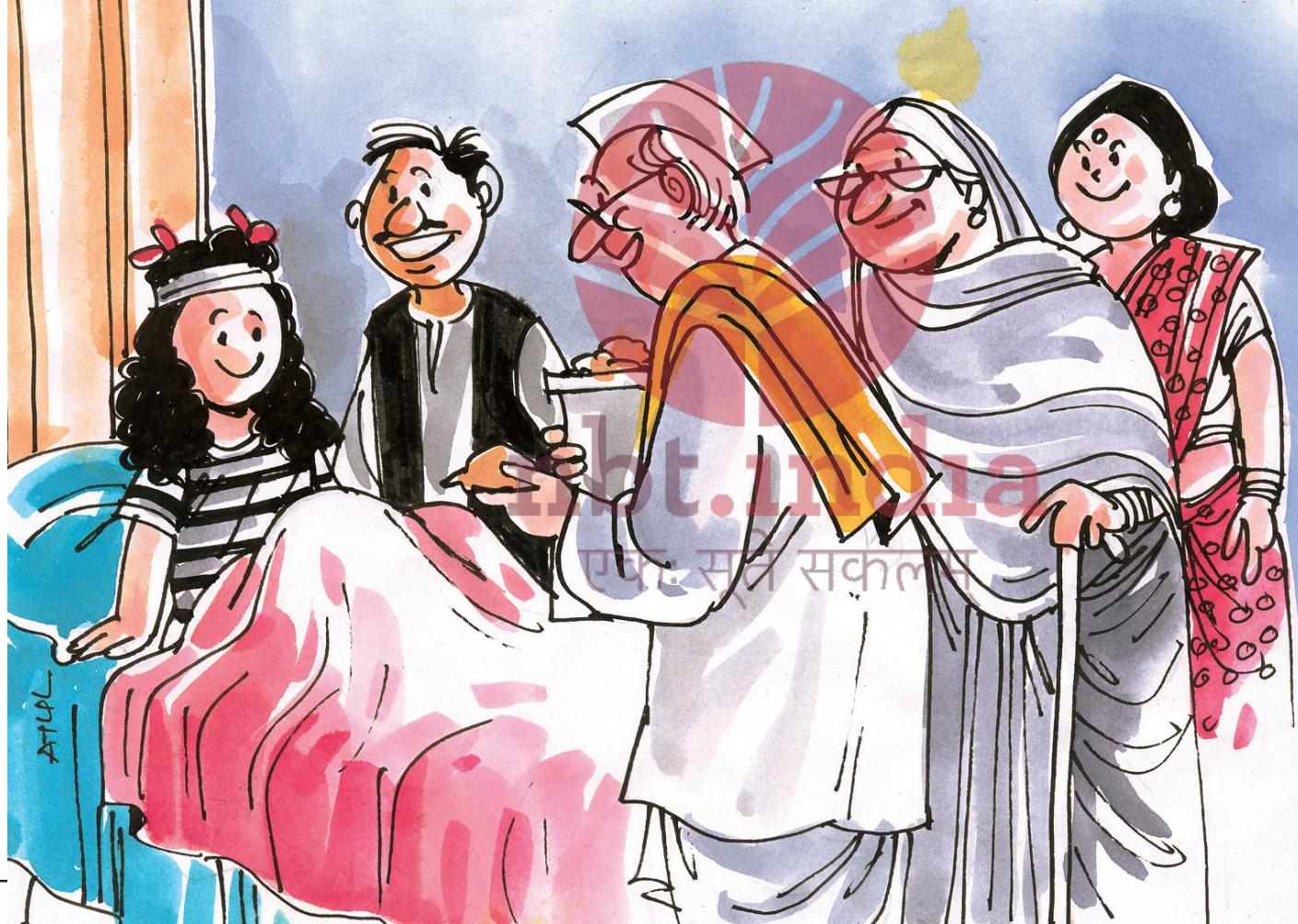
(नीरज के साथ सौरभ और विवेक दौड़ते हुए आते हैं।)

बाबा — (सबको गुझिया देते हुए) लो बच्चो! जितनी चाहो गुझिया खाओ। (बीच में गुझिया का डिब्बा रख देते हैं।)

सब बच्चे — (खुशी से चिल्लाते हैं) अरे वाह! (सब गुझिया उठाकर खाने लगते हैं।) (पापा ताली बजाते हैं। अब बच्चे भी ताली बजाते हैं।)

पापा — माँ! एक बात कहना चाहता हूँ। हमारे देश में लगभग तीस करोड़ परिवार हैं। यदि हर परिवार से एक गुझिया भी होलिका पर चढ़ायी गई तो तीस करोड़ गुझिया हो गईं। यह गुझिया तो होलिका में जलकर नष्ट ही हो जाती हैं। ...
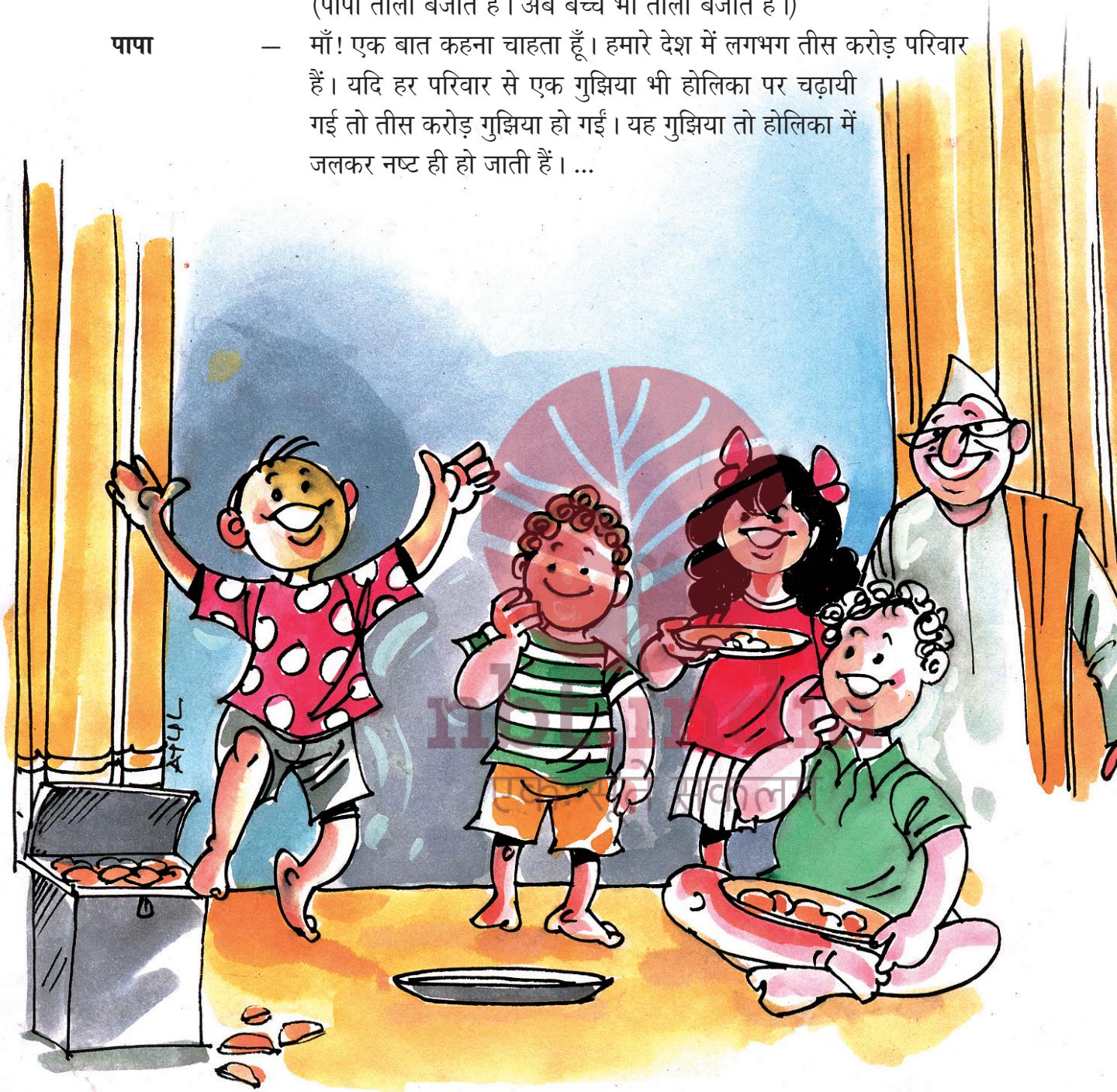
दादी — (बीच में बात काटते हुए) इससे अच्छा तो यह है कि यह गुझिया गरीबों को खिला दी जाएँ।

नीरज — पापा! आपकी बात मेरे मन में बैठ गई। अब हर साल हम सब अपने हिस्से की कम-से-कम एक-एक गुझिया गरीब बच्चों को खिलाएँगे।

विवेक, विनीता और सौरभ (एक साथ)— हाँ! हम सब यही करेंगे।

बाबा — सच्चे दिलों की बोली है...

दादी — रंगीन सभी की होली है...

बाबा — वाह-वाह, क्या बात कही है! (कहते हुए दादी के मुँह में गुझिया ठूँस देते हैं।)

सब लोग — (एक साथ चिल्लाते हैं) होली है!!!

पटाक्षेप

गोपसंस पेपर्स लि., नोएडा द्वारा मुद्रित